

शवि चालीसा
जय गणेश गरिजासुवन,मंगल मूल सुजान,
कहत अयोध्यादास तुम,देउ अभय वरदान।

जय गरिजापति दीनदयाला,
सदा करत सन्तन प्रतपिला।

भाल चन्द्रमा सोहत नीके,
कानन कृण्डल नागफनी के।

अंग गौर सरि गंग बहाये,
मुण्डमाल तन क्षार लगाये।

वस्त्र खाल बाघम्बर सोहे,
छविको देख नाग मुनि मोहे।

मैना मातु कहि वै दुलारी,
वाम अंग सोहत छवि न्यारी।

कर त्रिशूल सोहत छवि भारी,
करत सदा शत्रून क्षयकारी।

नंद गणेश सोहैं तहैं कैसे,
सागर मध्य कमल हैं जैसे।

कार्तिकि श्याम और गणराऊ,
या छविको कहि जात न काऊ।

देवन जबहि जाय पुकारा,
तबहि दुःख प्रभु आप नविरा।

कथियो उपद्रव तारक भारी,
देवन सब मली तुमहि जुहारी।

तुरत षडानन आप पठायउ,
लव नमिष महैं मारि गरियउ।

अप जलंधर असुर संहारा,
सुयश तुम्हार वदिति संसारा।

त्रपुरासुर सन युद्ध मचाई,
तबहि कृपा करि लीन बचाई।

कथिा तपहि भागीरथ भारी,
पूरव प्रतजिजा तासु पुरारी।

दाननि महँ तुम सम कोई नाही,
सेवक स्तुति करत सदाही।

वेद माह भिमि तब गाई,
अकथ अनादभिद नहीं पाई।

प्रकटी उदधिमिथन में ज्वाला,
जरत सुरासुर भए वहिला।

कीन्ह दया तहँ करी सहाई,
नीलकंठ तव नाम कहाई।

पूजन रामचन्द्र जब कीन्हा,
जीत के लंक वभीषण दीन्हा।

सहस कमल में हो रहे धारी,
कीन्ह परीक्षा तबहि पुरारी।

एक कमल प्रभु राखेउ गोई,
कमल नयन पूजन चहँ सोई।

कठनि भक्ति देखी प्रभु शंकर,
भये प्रसन्न दयि इच्छति वर।

जय जय जय अनन्त अविनाशी,
करत कृपा सबके घट वासी।

दुष्ट सकल नति मोहिसतावै,
भ्रमत रहौ मोहे चैन न आवै।

त्राह त्राहमैं नाथ पुकारो,
येह अवसर मोहि आन उबारो।

ले त्रशूल शत्रून को मरो,
संकट ते मोहि आन उबारो।

माता पति भ्राता सब होई,
संकट में पूछत नहीं कोई।

स्वामी एक है आस तुम्हारी,
आय हरहु मम संकट भारी।

धन नरिधन को देत सदाही,
जो कोई जाँचे सो फल पाही।

क्षमहु नाथ अब चूक हमारी।

शंकर हो संकट के नाशन,
वधिन वनिशन मंगल कारन।

योगी यत्निध्यान लगावै,
नारद सारद शीश नवावै।

नमो नमो जय नमः शविय,
सुर ब्रह्मादकि पार न पाय।

जो यह पाठ करे मन लाई,
ता पर होत है शम्भु सहाई।

ऋनयिँ जो कोई हो अधिकारी,
पाठ करै सो पावन हारी।

पुत्र होन कर इच्छा कोई,
नश्चय शवि प्रसाद तेह होई।

पण्डति त्रयोदशी को लावै,
ध्यान पूर्वक होम करावै।

त्रयोदशी व्रत करै हमेशा,
तन नहतिाके रहै कलेशा।

धूप दीप नैवेध चढावै,
शंकर सममुख पाठ सुनावै।

जन्म जन्म के पाप नसावै,
अन्त धाम शविपुर में पावै।

कहत अयोध्यादास आस तुम्हारी,
जानसिकल दुःख हरहु हमारी।